बहुमुखी प्रतिभा के धनी – रामकिंकर बैज

डॉ0 राकेश कुमार सिंह
असिसटेंट प्रोफेसर, ललित कला विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा
ईमेलः rksinghkuk@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 राकेश कुमार सिंह

बहुमुखी प्रतिभा के धनी – रामकिंकर बैज

Artistic Narration 2021,
Vol. XII, No. I,
Article No. 10 pp. 061-064

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-1-jan-june-2021/

सारांश

रामकिंकर बैज मूलतः मूर्तिकार थे किन्तु उन्होंने चित्रकारी भी बहुतायत में किया । उनकी मूर्तियाँ प्रायः हस्ट–पुष्ट, गतिशील, प्रफुल्लित जीवन शक्ति से भरपूर एवं जोशीले भावों वाली हैं। जो विशेषतायें रामकिंकर बैज के मूर्तिशिल्प की आकृतियों, विषय वस्तु एवं भाव स्पन्दन में मूर्तिमान हुई हैं वही विशेषतायें उनके चित्रों, रेखांकन एवं छापा चित्रों में भी उभर कर आयी हैं । वे प्रयोगवादी एवं अत्यन्त स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति थे । उनकी कला में दोनों ही चीजें प्रमुख तत्त्व के रूप में उभर कर आती हैं । रामकिंकर बैज ने शान्ति निकेतन में अध्ययन के दौरान उस समय प्रचलित सभी माध्यमों का गहन अध्ययन किया । प्रत्येक माध्यम में उन्होंने भरपूर कार्य किया तथा अपने प्रयोगवादी व क्रियाशील व्यक्तित्व के अनुरूप सभी माध्यमों की नित नई सम्भावनाओं और आयामों को खोजने हेतु आजीवन प्रयोग करते रहे ।

डॉ0 राकेश कुमार सिंह

प्रस्तावना

बहुआयामी प्रतिभा के धनी रामकिंकर बैज का जन्म 25 मई 1906 को पश्चिम बंगाल के बांकुडा जिले में हुआ। बचपन से ही उन्हें कला में अत्यधिक रूचि थी यही कारण है कि उनका सृजनात्मक व कलात्मक दृष्टिकोण उनके व्यक्तित्व में बचपन से ही परिलक्षित होता है। रामकिंकर ने बांकुड़ा के निवासियों की सृजनशील कल्पनाओं को बहुत योग दिया। जीवन के विभिन्न पक्षों में आस्था और आशावाद यहाँ की प्रमुख विशेषता रही है। रामकिंकर के जीवन पर इन सबका प्रारम्भ से ही प्रभाव पड़ा। यहाँ के सामाजिक ढांचें में कला का और शिल्पी का कार्य एक ही व्यक्ति करता है। इनके गाँव में विभिन्न शिल्पी व कलाकार रहते थे, वे इनके सम्पर्क में आते गये। आस–पास के अन्य गांवों में रुचिनुसार भ्रमण करके इन्होंने शिल्प का पर्याप्त ज्ञान अर्जित किया। मुख्यतः मिट्टी तथा काष्ट के खिलौनों पर चित्रकारी के प्रति इनका झुकाव अधिक था। शक्तिशाली ग्रामीण जन कला के साहसिक, शीघ्र, लयबद्ध ब्रस की बाह्य रेखायें रंग भरने की अनुरूपता सहित वे सामान्यतः सामाजिक व धार्मिक विषय अपने चित्रों में दर्शाते थे। इन्होंने अपने बचपन में दिवारों को ढंकती देवी–देवताओं की अनेक छवियों का आनन्द लिया और बच्चे के रूप में इन्होंने उनका अध्ययन किया और उन कार्यों की नकल की।

जब रामकिंकर बैज ने मूर्ति बनाने का कार्य आरम्भ किया उस समय शान्ति निकेतन में मूर्तिकला का कोई शिक्षक नहीं था। वे मिट्टी से सहज और स्वभाविक रूप से अनायास मूर्ति निर्माण करते हुए मूर्तिकला की सर्जना करते थे। वे ज्ञान से नहीं अपितु शक्ति के अपरिमेय स्रोतों से कला सर्जना करते थे। शैक्षिक प्रशिक्षण का अभाव उनके लिए हितकर सिद्ध हुआ लेकिन उन्हें इस बात का लाभ प्राप्त हुआ कि कुछ प्रगतिशील यूरोपीय मूर्तिकार उनसे मिलने आये, जिन्होंने रामकिंकर को मिट्टी से मूर्ति बनाने के आकर्षक कला–कार्य की ओर प्रवृत्त किया। आस्ट्रिया की लिजा बौन पौट और बोर्डले की छाला मादाम लिवर्ड ने अतिथि कलाकार के रूप में मिट्टी से प्रतिकृति निर्माण के कला कार्य का प्रदर्शन किया। इस संक्षिप्त परिचय ने रामकिंकर पर जादू की तरह असर किया। वे मन्त्रमुग्ध से हो गये। इस प्रकार मूर्तिकला के प्रति आकर्षण की जो लौ उनमें जगी वह हमेशा प्रज्वलित रही। जब एक ऐसी भारतीय शैली का विकास करने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा था जो इसके परम्परागत रूपों और आकृतियों से सम्बन्धित हो, उस समय रामकिंकर ने पूर्व परम्पराओं की परवाह किये बिना स्वयं अपनी ही दिशा का चयन किया। वे तपते हुए सूर्य की भयंकर गर्मी में इधर–उधर घूमते थे और उन परम्परागत तथा रूढ़ आधारों, दिशाओं को छोड़ते हुए जिनका उनके इर्द–गिर्द सर्वत्र अनुसरण किया जा रहा था।

रामकिंकर बैज आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के पथ प्रदर्शक थे। उन्होनें युवा पीढ़ी का कलाक्षेत्र की अनेक दिशाओं में मार्ग दर्शन किया। उस समय यहाँ तक कि प्लास्टर ऑफ पेरिस भी कलकत्ता से लाना पड़ता था। राम किंकर ने सीमेन्ट, कंकरीट ढलाई में प्लास्टर ऑफ पेरिस का एक विकल्प ढूंढ निकाला। उन्होंने लोहे की छड़ों और स्थानीय नदी से प्राप्त रोड़ों से युक्त सीमेन्ट के मिश्रण का प्रयोग करना शुरू कर दिया। उन्होंने इनसे वृहद आकार का मूर्तियों की सर्जना की। तकनीकी दृष्टि से इससे मूर्तिकला की एक नई विधा का द्वार खुल गया। इस श्रृंखला की पहली

बड़ी पतली और छरहरे बदन की सुजाता की प्रतिमा थी और इसके बाद आदम कद से बड़े आकार की मूर्तियाँ वाली 'संथाल परिवार' नामक मूर्ति थी जो हमारे समय की भारतीय मूर्तिकला के निर्माण के लिए सर्वत्र उत्साह व्याप्त था । इस कलाकृति के निर्माण की तीव्र उमंग से उत्प्रेरित रामकिंकर नये माध्यम से प्रयोग में सफलता प्राप्त करने के दृढ़ संकल्प से अनुप्राणित होकर तथा आकाश के निचे खुली हवा में अति विशाल मूर्तियाँ बनाने तथा उन्हें सुस्थापित करने की महत्वाकांक्षा के वशीभूत होकर तपते हुए सूर्य की प्रचण्ड गर्मी में किसानों का स्ट्रा हैट पहने हुए निरन्तर कलाकृतियों के निर्माण में रत रहे । धीरे–धीरे उनकी मूर्तिकला की आन्तरिक संरचना ने उसके बाह्य और आकारगत निरूपण को अभिभूत कर दिया । बार–बार यह कला साधना महत्त्वपूर्ण और अमूर्त की ओर अग्रसर हुई । अतिथि गृह के सामने रंगीन सीमेन्ट की पालिश की हुई चमकीली मूर्तिकला और रवीन्द्रनाथ का अमूर्त रूप चित्र, अमूर्त की ओर इस यात्रा का प्रथम उदाहरण है ।

रामकिंकर बैज ने शान्तिनिकेतन में मूर्तिकला का एक नया अध्याय शुरू किया । उनका "ठाकुर का सिर" और "धान पीटने वाला" इस देश में मूर्ति सम्बन्धी अमूर्तिकरण के श्रेष्टतम नमूने हैं । उस किस्म की किसी भी कला कृति का निर्माण अब तक नहीं किया गया है। इन सर्जनाओं के परिणाम स्वरूप उनके और प्राधिकारियों के बीच काफी कटुता पैदा हो गयी। कार्य करती हुई महिला की नग्नावस्था में आकृति, कुछ व्यक्तियों द्वारा आपत्ति जनक पाई गई। उस समय के हमारे समाज की रूचि ऐसी ही रूढ़िवादी थी । एक ओर हम अपनी प्राचीन परम्परा के गुणों तथा उसकी अच्छाइयों का बड़े गर्व के साथ बखान करते थे लेकिन कोणार्क अथवा खजुराहो की कामोदीपक मूर्तियों, अपनी बांहों के निचे पानी का घड़ा ले जाती हुई जवान महिलाओं के॰ हेमेन मजूमदार के ऐसे चित्रों को किसी भी प्रकार से आपत्तिजनक या अश्लील अथवा भद्दा बताने का साहस किसी में नहीं था जिनमें उक्त युवा महिलाओं के बदन के उभारों अथवा मोड़ों को उनके गीले वस्त्रों के माध्यम से विशेष रूप से चित्रित किया गया है। इस अभागे देश में, सर्वोत्तम कृति भी सद्भावना और सम्मान की पाल नहीं बन सकती है यदि यहाँ का समाज उसके कारण अपने को अपमानित महसूस करता है। रामकिंकर को भी अनेक बार इस प्रकार की असीम बाधाओं अथवा अवरोधों का सामना करना पड़ा। क्योंकि वे रूढ़ परम्परावादी नहीं थे। यह नहीं कहा जा सकता है कि इससे उनको–भारी आघात अथवा दुख नहीं पहुंचता था लेकिन वे अपने आप ही यह अपमान सहने के लिए शारीरिक व मानसिक दृष्टि से पूर्णतया समर्थ थे।

उनकी प्रमुख मूर्तियों में आश्रम के मन्दिर, पेड़ों से घिरा हुआ संथाल परिवार, आदिवासी समूहों की ताल और लयबद्ध पदचापें, दैनिक कार्य करने के बाद उनका समय पर लौटना इन सबसे सम्बन्धित कलाकृतियों द्वारा हमारी स्मृतियाँ हमेशा आभिभूत रहेंगी। इसी के साथ आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के जन्म की प्रारम्भिक वेदनायें भी गुथी हुई रहेंगी। रामकिंकर बैज ऐसे गुरु थे जो अपने शिष्यों को घर हो या कक्षा या अन्य कोई स्थान हो उनको बताने से नहीं हिचकते थे। इनके चरणों में बैठकर इनके अनेक षिश्यों ने प्रकृति की तरफ देखना सीखा। इनके व्यक्तित्व में कलाकार और तपस्वी का अद्भुत समीक्षण था। प्रशंसा और दिखावे से दूर ऐसा महान था उनका व्यक्तित्व। इसी व्यक्तित्व के कारण वे अपने शिष्यों के प्रिय गुरु थे क्योंकि गुरु के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके शिष्यों पर देखने को मिलता है। इन्हीं के प्रिय शिष्यों में बलबीर सिंह कट्ट भी थे

जो स्वयं बड़ें मूर्तिकार थे और मेरे अध्यापक भी रहे हैं । वे भी रामकिंकर से सम्बन्धित काफी संस्मरण सुनाया करते थे।

रामकिंकर बैज मूलतः मूर्तिकार थे किन्तु उन्होंने चित्रकारी भी बहुतायत में किया। उनकी मूर्तियाँ प्रायः हस्ट–पुष्ट, गतिशील, प्रफुल्लित जीवन शक्ति से भरपूर एवं जोषीले भावों वाली हैं। जो विषेशतायें रामकिंकर बैज के मूर्तिशिल्प की आकृतियों, विषय वस्तु एवं भाव स्पन्दन में मूर्तिमान हुई हैं वही विशेषतायें उनके चित्रों, रेखांकन एवं छापा चित्रों में भी उभर कर आयी हैं। वे प्रयोगवादी एवं अत्यन्त स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनकी कला में दोनों ही चीजें प्रमुख तत्त्व के रूप में उभर कर आती हैं। रामकिंकर बैज ने शान्ति निकेतन में अध्ययन के दौरान उस समय प्रचलित सभी माध्यमों का गहन अध्ययन किया। प्रत्येक माध्यम में उन्होंने भरपूर कार्य किया तथा अपने प्रयोगवादी व क्रियाशील व्यक्तित्व के अनुरूप सभी माध्यमों की नित नई सम्भावनाओं और आयामों को खोजने हेतु आजीवन प्रयोग करते रहे। जलरंग रामकिंकर बैज का सबसे प्रिय माध्यम रहा है। ज्यादा चित्र भी उन्होंने इसी माध्यम में बनाये हैं उनके चित्रों का सबसे प्रमुख तत्त्व गति व प्रवाह भी अन्य माध्यमों की अपेक्षा इसी माध्यम में स्वाभाविक व प्रभावशाली रूप में उनके चित्रों में मुखरित हुआ है। उनकी तूलिका जितनी तीव्र गति से जलरंग माध्यम में चित्र तल पर दौड़ती थी तैल आदि माध्यम में नहीं दौड़ पाई। जलरंग माध्यम का प्रयोग उन्होंने पारम्परिक पद्धति से बिल्कुल हट कर किया तथा अपनी स्वतन्त्र व नवीन पद्धति विकसित की। तैल माध्यम पर भी रामकिंकर बैज को पूर्ण अधिकार प्राप्त था। उनके समकालीन चित्रकार जहाँ तैल रंग में केवल यथार्थ ढंग के व्यक्ति दृश्य, दृश्य चित्र अथवा प्राकृतिक दृश्य चित्र ही अंकित करते थे वहाँ रामकिंकर बैज ने अपने समय से बहुत आगे जाकर तैल माध्यम में क्रियात्मक संयोजन, प्राकृतिक दृश्य चित्र, आकार भंग पद्धति में अंकित किये थे। इससे पहले शान्ति निकेतन में किसी भी कलाकार ने तैल माध्यम में चित्र नहीं बनाया था इनके चित्र को देखकर उनके कला अध्यापक नन्दलाल बसु अक्रामक हुए किन्तु उन्होंने कभी भी इनको तैल माध्यम में काम करने से नहीं रोका और न कभी दुविधा उत्पन्न की । रामकिंकर का पहला तैल चित्र लड़की और कुत्ता था। इन्होंने छापा चित्रों को भी अपने चित्रों में स्थान दिया । रामकिंकर जितने मूर्तिकार एवं चित्रकार के रूप में सुपरिचित रहे हैं छापा चित्रकार के रूप में उतने प्रसिद्ध नहीं हैं। उनके छापा चित्र अपनी मूर्तियों और चित्रों के समान ही निजस्वता के साथ प्रतिष्ठित हैं। छापा चित्र के प्रति उनकी स्नेह पूर्ण चेष्ठा और निष्ठा भी प्रबल थी।

संदर्भ ग्रंथ

1 रामकिंकर बैज, *बर्थ सेन्चुरी,* ललित कला अकादमी, रीजनल सेन्टर भुवनेश्वर, पृ **9**
2 'क' कला सम्पदा एवं वैचारिक, फरवरी–मार्च, 2006, पृ **7**
3 गिरीराज किशोर अग्रवाल, *आधुनिक चित्रकला,* पृ **75**
4 समकालीन कला, नवम्बर 2005– फरवरी 2006, अंक 28, पृ **9–10**
5 जी॰ के॰ अग्रवाल, *आधुनिक भारतीय चित्रकला,* पृ **37**
6 जी॰ के॰ अग्रवाल, *आधुनिक भारतीय चित्रकला,* पृ **75**
7 समकालीन कला, नवम्बर 2005– फरवरी 2006, अंक 28, पृ॰ **9–10**